ISSN:2583-8849



शकुंतला पालीवाल
उदयपुर, राजस्थान

वरिष्ठ और प्रतिष्ठित बाल साहित्यकार श्रीमती आशा पाण्डेय ओझा 'आशा' द्वारा रचित बाल कविता संग्रह "चलो चले हम गाँव" सर्वभाषा ट्रस्ट नई दिल्ली से वर्ष 2024 में प्रकाशित हुआ है। पुस्तक पेपर बैक संस्करण में है। आवरण पृष्ठ आकर्षक और रंगीन है। रचनाओं के अनुरूप प्रत्येक पृष्ठ पर अंकित सुंदर चित्र कृति को और भी अधिक आकर्षक बनाते हैं। बहत्तर पृष्ठ की इस कृति में कुल 36 बाल कविताएँ संग्रहित हैं ।

पुस्तक की पहली कविता "जागो जागो बिटिया रानी" अनायास ही हम सभी बड़ों को भी बचपन की याद दिलाती है। कविता के माध्यम से अनुशासन में रहकर बच्चे किस प्रकार अपने लक्ष्य की और अग्रसर हो सकते हैं और कैसे आदर्श व्यक्तित्व का निर्माण कर सकते हैं, उसकी नींव बचपन से ही डाली जानी चाहिए, इसको सरल और सहज शब्दों में उल्लेखित किया गया है। कविता में भारतीय संस्कृति के उद्धत जीवन मूल्यों से नव पीढ़ी को अवगत कराने का सफल और सार्थक प्रयास करने के साथ ही स्वस्थ शरीर-स्वस्थ मन की ओर ध्यान इंगित किया गया है।

इसी कविता की अंतिम पंक्तियाँ -
आभार जताओ ईश्वर का तुम
कुछ पल उसके नाम करो
द्वेष मिटाकर मन के सारे
मन को पावन धाम करो
दीप जलाकर साँझ ढले तुम
खुशी जगत की माँगो रे ।।

देशभक्त और राष्ट्र धर्म सर्वोपरि है, यह दर्शाती देश प्रेम से ओत-प्रोत कविताएँ "हम सब की है जान तिरंगा" और "भारत देश है कितना प्यारा" नई पीढ़ी को तिरंगे के सम्मान के साथ- साथ मातृभूमि की रक्षा, त्याग और बलिदान की सीख देती है। लीक से हटकर मनोरंजन के साथ खेल-खेल में सीख देती कविताएँ कवयित्री की कल्पनाशीलता प्रकट करती है जो वास्तव में अद्भुत और अनुपम है। जिसमें कविताएं "मछली रानी बोलो बोलो" बाल मनोविज्ञान का एक श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करती है। नन्हें बच्चों के मन में कैसे कौतूहल हो सकते हैं,

उसकी एक बानगी-
स्कूल तुम्हारी कैसी होती/ड्रेस तुम्हारी कैसी होती /कौन पढ़ाता बोलो तुमको
या फिर खुद से पढ़ती हो?

ऐसी ही एक कविता "बिल्ली बैठी कार में" बच्चों को खेल -खेल में यातायात सुरक्षा और नियम जैसे गंभीर विषयों को बहुत ही सहजता से सिखलाती प्रतीत होती है। इसी कविता के पंक्तियां-

बिल्ली बैठी कार में /घूम रही बाजार में
पीली उसकी ड्रेस थी/जिस पर बढ़िया प्रेस थी।।
साथ ही ये कविता मोबाइल के बढ़ते उपयोग और दुष्परिणामों के विषय में भी सचेत करती है कि-
मोबाइल था हाथ में /लगी किसी से बात में
बातों में मशगूल वो/भूली ट्रैफिक रूल वो।।
आड़े फिरकर रस्ते में /रोका ट्रैफिक दस्ते ने
हवलदार से लड़ गई/जिद पर अपनी अड गई।।
हुई क्रोध से लाल वो/फुला रही है गाल वो/
काट दिया चालान जब /आया उसको ज्ञान तब।।

इसी तरह "मकोड़े का ट्वीट" कविता आज के युग में जहां सोशल मीडिया पर अपना निजी जीवन सार्वजनिक करने की होड़ लगी हुई है, उसको बहुत ही रोचक तरीके से प्रस्तुत कर गंभीर विषय पर बच्चों को सीख देने का सार्थक प्रयास किया गया है। इसी कविता से प्रथम पंक्तियां-

एक मकोड़े ने किया/ट्विटर पर यह ट्वीट
आज बनाई साथियों/गाजर घी की स्वीट।।
कई मकोड़े आ गए/और बजाई बेल
ज्यों ही खोला द्वारा तो/भीतर आ गई रेल।।

और कविता के आखिर में:-

बचा नहीं खुद के लिए/बर्तन ढेरम-ढेर
सारे साथी चल पड़े /घर को खूब बिखेर
ट्वीट पड़ा महंगा बहुत /रोये सर को पीट

ऐसे ही कविता "एक चिरैया" कल्पनाशीलता का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करती है।

इसी प्रकार खेल खेलने की प्रेरणा देती कविता "आओ मिलकर खेले खो-खो " द्वारा घर से बाहर खेले जाने वाले खेलों को खेलने के लिए बच्चों को प्रेरित करती है।

पुस्तक की शीर्षक कविता "चलो चले हम गांव" के माध्यम से कवयित्री ने गाँव को जिया है। वहाँ की मिट्टी की महक को महसूस किया है। बालपन में की गई शरारते, मस्तियों का संबंध गाँव से ही है,

इसी कविता की पंक्तियाँ -

बड़ी निराली बात है/बचपन की हर बात
सोने जैसे दिन सभी/चाँदी जैसी रात।।

इसी तरह कविता "भरा गाँव में सुंदर मेला" गाँव की यादों को तरोताजा करता है। बाल कविता संग्रह चलो चलें हम गाँव की शेष कविताएँ भी बच्चों को रोचक जानकारी प्रदान करती है। जिसमें ठंडा बर्फ का गोला है, तो हर मन को भाती प्यारी गुड़ियारानी भी है। पापा लाये गरम जलेबी भी है, जो धर्मनिरपेक्षता का पाठ पढ़ाती है।

"क्या-क्या छूटा" कविता में उन सभी खेलों की लंबी लिस्ट है जो खेल आज बहुत पीछे छूट चुके हैं। सारे भेदभाव भुलाती रोशनी से जगमग दिवाली है तो साथ में सूरज और चाँद-तारे भी हैं। हर बाल मन को लुभाती कागज की नाव भी है तो मिठाइयों की अजब-गजब लड़ाई भी है और अंत में पुस्तक की अंतिम कविता -

नए साल तुम ऐसे आना
साथ खुशी का झोला लाना
जैसे लाते बाबूजी।।

अपनेपन से भरी संवेदनाओं और संयुक्त परिवार की मिठास को प्रकट करती बहुत ही खूबसूरत कविता है, जो अनायास ही मन को गुदगुदाती है, और साथ में गुनगुनाने पर भी विवश करती है।

"चलो चले हम गांव" बाल कविता संग्रह में कवयित्री श्रीमती आशाजी ने बाल मन को लुभाने वाले विविध विषयों पर सहज, सरल और सरस भाषा में सुंदर कविताओं का सृजन किया है। सुंदर रंगीन मुखावरण, स्तरीय मुद्रण और सहज-सरल भाषा ने इन कविताओं को बाल सुलभ और बोधगम्य बनाया है। इसलिए सभी कविताएँ बच्चों के दिलों में बरबस उतरती जाती है।

बाल कविता साहित्य की ऐसी विधा है जिसे बच्चों की भाव भूमि और उनके मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर ही रचा जाना चाहिए। बाल कविताएँ ऐसी हो जिनको पढ़ कर बड़ों अथवा बच्चों में आनंद का संचार हो। बालको का व्यक्तित्व विकास हो और स्वस्थ एवं सशक्त समाज का निर्माण किया जा सके। साथ ही बच्चों को बचपन से ही प्रेरणास्पद कविताओं के माध्यम से जोड़ते हुए उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास किया जा सके।

कृति में बाल साहित्य के लिए निर्धारित मापदंडों का पालन करते हुए एक से बढ़कर एक रोचक, मनोरंजक, ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायी रचनाएं प्रस्तुत की है। छंद बद्ध कविताएं बच्चों को मनोरंजन के साथ रोचक जानकारी भी प्रदान करेगी। बच्चे रुचि लेकर पढ़ेंगे। बाल मनोविज्ञान को ध्यान में रखकर यति, गति और लय का पूर्ण निर्वाह किया गया है जहां छन्द और विज्ञान का अनूठा संगम है।

कृति में कहीं भी कठिन शब्द नहीं है। बच्चें आसानी से कविता पढ़ कर गुनगुनाएंगे। कृति "चलो चले हम गांव" निश्चय ही हिंदी बाल साहित्य जगत में अपना स्थान बनाएगी, ऐसी आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है। इस कृति का स्वागत होना चाहिए। बालोपयोगी सुंदर काव्य कृति सृजन हेतु आदरणीय आशा जी पांडे को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

ISSN:2583-8849

